आवर्तन की पूर्णता की ओर

१ दिसम्बर, २०१८

आत्मीय पाठकगण,

अनन्तता के अपरिमित विस्तार के बीच कहीं यह वर्ष आरम्भ हुआ और उसी अपरिमित विस्तार के बीच यह समाप्त होने जा रहा है। परन्तु फिर, वास्तव में, इसका क्या अर्थ हुआ कि यह समाप्त होने जा रहा है। कहीं यह ऐसा तो नहीं है कि अंग्रेज़ी के अंक '8' के घुमावदार आकार की तरह आपका पथ भी पुनः वहीं से घूमना शुरू हो रहा है, जहाँ आपको उसका समापन लग रहा था। यद्यपि, आपने जहाँ से आरम्भ किया था, वहाँ से आप बहुत दूर हैं, तथापि, आप आवर्तन की पूर्णता की ओर भी आ रहे हैं। आपने वर्ष २०१८ के श्रीगुरुमाई के सन्देश, 'सत्संग' के अभ्यास से इतना कुछ सीखा है, तथापि हर बार जब आप अन्तर के सम्पर्क में आते हैं, हर बार जब आप ठहरते व जुड़ते हैं तो आप उसकी ओर लौट आते हैं जिसे आप बहुत लम्बे समय से जानते हैं।

हम, अब दिसम्बर माह में आ पहुँचे हैं जो वर्ष २०१८ का अन्तिम माह है। विश्वभर में लोग क्रिस्मस, हनुक्काह तथा शीत ऋतु के अन्य उत्सवों को मनाने की तैयारियों में जुटे हैं। इस समय में कोई तो जादू समाया हुआ है, एक रहस्यात्मकता व्याप्त है जो इस बात से अप्रभावित है कि हम कौन-सा महोत्सव मना रहे हैं या कोई महोत्सव नहीं मना रहे, हम विश्वास करते हैं या नहीं करते हैं। क्या यह जादू केवल हमारे साथ हो रहा है या गोल घूमती पृथ्वी में ही यह जादू है जिसके कारण विश्व के ठण्डे प्रदेश बर्फ़ से ढँक गए हैं? क्या यह जादू केवल हमारे साथ हो रहा है या लोगों के परस्पर व्यवहार में ज़रा अधिक प्रेम व सौहार्द आ गया है और उनके कृत्य एक ऐसी सच्ची सौम्यता व सुन्दरता को दर्शा रहे हैं जो तब आती है जब एक व्यक्ति, दूसरे व्यक्ति को देखता है, *सचमुच* देखता है? क्या हम ऐसी कल्पना कर रहे हैं या फिर यह हमारी ललक है — उस अनकही चीज़ की, शायद प्रेम की — जिसे हम इस समय और अधिक तीव्रता से महसूस कर रहे हैं? यह ऐसा है मानो पश्चिमी हवा हमारी सत्ता में भ्रमण कर रही हो और जहाँ कहीं भी उसे रिक्त स्थान मिल रहा है वहाँ वह सुरमय तान छेड़ रही हो।

पिछले कई वर्षों से, गुरुमाई जी ने एस.वाय.डी.ए. फ़ाउन्डेशन के शिक्षकों और वक्ताओं से क्रिस्मस के दौरान भगवान के विषय में वार्ताएँ देने के लिए कहा है। यह एक बहुत ही सुन्दर आदेश है, एक ऐसा आदेश जो बिल्कुल स्पष्ट कर देता है कि क्रिस्मस के इस पर्व का जो महत्त्व है, वह क्यों है। क्योंकि, वह दिव्यता जो प्रेम, प्रकाश और शान्ति के रूप में प्रकट होती है, उसका सामूहिक स्मरण ही तो है जो दिसम्बर में वातावरण को विशेष चमक प्रदान करता है। वह क्या है जिसे हम दयालुता के कृत्यों में देखते हैं, वह सद्‌गुणों की एक अभिव्यक्ति ही तो है, वे सद्‌गुण, जो हम सभी के अन्तर में विद्यमान हैं और इस बात की अनगिनत बार पुष्टि करते हैं कि मूलतः वह क्या है जो हम सभी को जोड़ता है और हमें मनुष्य बनाता है? वह क्या है जिसे हम ललक के कम्पित लेकिन फिर भी स्पष्ट स्वरों में सुनते हैं, वह जुड़ जाने की पुकार ही तो है — उससे जुड़ने की, जो सहजता से हमारी पहुँच में है?

अतः, जिस तरह हमने इस वर्ष की शुरुआत की थी, उसी तरह हम इसका समापन भी करेंगे : भगवान का स्मरण करके, दिव्यता का आवाहन करके। वर्ष २०१८ के पहले दिन से, जबसे हमने श्रीगुरुमाई का सन्देश प्राप्त किया है, हम अपने हृदय में विद्यमान परम सत्य के साथ जुड़ने का, परम सत्य को उसके विभिन्न स्वरूपों में पहचानने का और उसके अनगिनत नामों की ध्वनियों में सुनने का प्रयत्न कर रहे हैं। हमारे प्रयत्नों को पग-पग पर श्रीगुरुमाई की सिखावनियों व उनकी कृपा का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ है।

इस बात को ध्यान में रखते हुए, इस बिन्दु तक अपनी साधना के सन्दर्भ को ध्यान में रखते हुए हम दिसम्बर माह में प्रवेश कर सकते हैं। हम ऐसा समझ सकते हैं कि, हाँ, भगवान की स्मरणिकाएँ इस समय हमें विशेष रूप से सुलभ हो सकती हैं, *और* यह हमारा सजग प्रयास है जिसके कारण भगवान का प्रकाश हमारे बोध में और अधिक तेजस्विता के साथ चमचमाता है। हम सतत सत्संग के क्षणों का निर्माण करते रह सकते हैं — यहाँ, वहाँ, सब जगह। हम निरन्तर, यहाँ तक कि अभी भी, सत्य के बारे में जानने का प्रयास कर सकते हैं कि यह कैसा महसूस होता है, इसकी ध्वनि कैसी है, इसके रस का, 'सत्यरस' का स्वाद कैसा है।

आख़िरकार, यह एक यात्रा है जो चलती रहती है। यही कारण है कि आवर्तनों में घूमते रहते हुए भी उन्नति की जा सकती है, क्योंकि आवर्तनों के बावजूद भी अनन्तता, अनन्त ही रहती है। ज्ञानेश्वर महाराज कहते हैं, "आत्मप्रभा नित्य नवीन है।"[१] हमारे उद्यम हमें बार-बार उसी स्थान पर ले आते हैं, मात्र इसलिए कि और अधिक गहरे जाने के लिए हम और भी अधिक विस्मयों को खोज सकें, और अधिक आनन्द को खोज सकें, अधिक प्रेरणा की खोज कर सकें। यह वर्ष भले ही, बहुत जल्द समाप्त

होने जा रहा है परन्तु सत्संग का हमारा अभ्यास, अपने आप को खुद की अच्छी संगति से परिचित कराने का अभ्यास, अपनी सत्ता के परम सत्य के प्रति जागरूक होने का अभ्यास — वास्तव में, यह कभी समाप्त नहीं होता।

इस माह, जब शीत ऋतु के महोत्सव और उनसे सम्बन्धित कार्यों की व्यस्तता आ रही है, सिद्धयोग पथ की वेबसाइट, सत्संग के क्षणों की रचना करने में आपकी सहायता करेगी। आप वेबसाइट पर, 'श्रीगुरुमाई की ओर से वर्ष २०१८ के लिए क्रिस्मस की शुभकामनाएँ' [सीज़न्स् ग्रीटिंग] प्राप्त करके शुरुआत कर सकते हैं — और फिर पूरे माह के दौरान आप बार-बार इस उत्कृष्ट कार्ड को देखते रहें, जैसा कि आप निस्सन्देह करना चाहेंगे। श्रीगुरुमाई की ओर से मिलने वाले इस उपहार की प्रत्येक छवि में, प्रत्येक शब्द में, प्रत्येक चिह्न व आकार में और प्रत्येक ध्वनि में एक अर्थ निहित है। यह हमें श्रीगुरुमाई का प्रेम प्रदान करता है; यह उनकी सिखावनियों को प्रकट करता है।

आगे, इस माह वेबसाइट पर कहानियाँ, नामसंकीर्तन 'राम राघव' की एक रिकार्डिंग और एक शान्ति-मन्त्र की व्याख्या व उसका ऑडिओ प्रकाशित किया जाएगा। वेबसाइट पर, उल्लासपूर्ण पोस्ट जैसे 'खुशियों से भरे उत्सवों की वार्षिक गैलरी' और 'वर्चूअल हॉलिडे ट्री' [virtual holiday tree] भी प्रकाशित किए जाएँगे जिनमें आप भी परस्पर भाग ले पाएँगे और उस पेड़ को उन आभूषणों से सजा सकेंगे जो वर्ष २०१८ के श्रीगुरुमाई के सन्देश के स्मरणसूचक हैं।

अतः, इन सभी तरीक़ों तथा अन्य कई तरीक़ों द्वारा, हम एक संघम् के रूप में साथ मिलकर शीत ऋतु के उत्सवों को मनाएँगे। हम एक-साथ इस वर्ष का समापन करेंगे। और एक-साथ नववर्ष का आरम्भ करेंगे।

जी हाँ — १ जनवरी, २०१९, मंगलवार के दिन हम सभी सिद्धयोग वैश्विक हॉल में 'मधुर सरप्राइज़' के लिए एकत्रित होंगे। हम उसी प्रकार एकत्र होंगे, जैसा कि शताब्दियों से आध्यात्मिक जिज्ञासुओं ने किया है, ताकि श्रीगुरु का प्रज्ञान प्राप्त कर सकें — वह प्रज्ञान जो उत्थान करता है और रूपान्तरित करता है, जो अज्ञान का पर्दा हटाकर हमें परम वास्तविकता की ओर मार्गदर्शित करता है, उस वास्तविकता की ओर जो उससे कहीं अधिक यथार्थ और आनन्दमय है जिसके हम अभ्यस्त हो चुके हैं। श्रीगुरुमाई, हम सभी को वर्ष २०१९ के लिए अपना सन्देश प्रदान करेंगी और हम, हम सभी, कितने सौभाग्यशाली हैं।

'मधुर सरप्राइज़' २०१९ के विषय में तथा सत्संग हेतु पूर्व-तैयारी के विषय में अधिक जानकारी शीघ्र ही सिद्धयोग पथ की वेबसाइट पर उपलब्ध होगी।

* * *

मैं इस पत्र का और वर्षभर चलते आए हमारे इस सुन्दर पत्राचार का समापन, आपको एक प्रसंग बताकर करना चाहूँगी।

यह पिछले वर्ष, ३१ दिसम्बर, २०१७ को, नववर्ष की पूर्व-सन्ध्या थी। यह संगम था, एक और नए आरम्भ व समापन का, एक सन्धि-काल था, एक दहलीज़ थी, अनन्तता के दो घुमावदार आवर्तनों में, यह हमारा वह मोड़ था, जिसे हम पूरा कर चुके थे।

कुछ अन्य सेवाकर्ता और मैं, गुरुमाई जी के साथ शाम की पूजा के लिए भगवान नित्यानन्द मन्दिर जा रहे थे। जब गुरुमाई जी अनुग्रह की ऊपर की लॉबी से गुज़र रही थीं तब संयोग से हमें वहाँ उनके दर्शन हो गए। जब उन्होंने हमसे पूछा कि हम सब कहाँ जा रहे हैं तो हम सभी ने एक-एक करके और बड़े उत्साह के साथ कहा, "जहाँ आप जा रही हैं, गुरुमाई जी!"

जब हम गलियारे से होते हुए मन्दिर की ओर जा रहे थे, तब तक आसमान में अंधेरा हो चुका था और सूर्य देवता ने कुछ समय पहले ही रात की रेशमी चादर ओढ़ी थी। पास ही की एक रेलिंग पर टिमटिमाती, जल-बुझ करती रोशनी की लड़ियाँ लगी हुई थीं। और दूर किसी स्थान से, शायद लॉबी के दूसरी ओर के किसी कमरे से, हमें हँसी का अट्टहास सुनाई दे रहा था।

हम गुरुमाई जी के पीछे-पीछे मन्दिर में गए। एक-एक करके हम पूजा-सामग्री आगे लेकर लाए — इत्र, कुमकुम, चन्दन का लेप, हल्दी, अक्षत, और बहुत-सी, गुलाब के फूलों की पंखुड़ियाँ। मन्दिर के अन्दर शान्ति छाई हुई थी, परन्तु फिर भी उसमें एक स्पन्द था और एक मख़मली मृदुलता व्याप्त थी। हम मन्त्रमुग्ध होकर देख रहे थे, गुरुमाई जी ने बड़े बाबा की पादुकाओं का विभिन्न इत्रों और लेप से अभिषेक किया और फिर अपने हाथों में गुलाब की पंखुड़ियाँ उठाईं। उन्होंने पादुकाओं पर पंखुड़ियाँ चढ़ाईं, यह ऐसा लग रहा था मानो फूल, रंगों का एक अविरत झरना बना रहे हों।

उसी दिन, कुछ समय पहले श्री निलय में एक सत्संग के दौरान गुरुमाई जी ने कहा था कि नामसंकीर्तन के दौरान कुछ युवा-पुरुष नृत्य करें। बाद में जब गुरुमाई जी ने एक संगीत-सेवाकर्ता से यह पूछा कि

क्या उसमें उन युवाओं को नृत्य करता देख ईर्ष्या की भावना आई [क्योंकि वह उस समय बाँसुरी बजा रहा था] तो उसने बताया कि हाँ, असल में वह *ख़ुद* भी नृत्य करना चाहता था — उसे नृत्य करना बहुत पसन्द है।

ये संगीत-सेवाकर्ता, उस सन्ध्या मन्दिर में उपस्थित लोगों में से एक थे। और उनकी वह इच्छा जो कुछ ही घन्टों पूर्व उन्होंने अपने श्रीगुरु के समक्ष इतनी निष्ठा से व्यक्त की थी, फलीभूत होने वाली थी। गुरुमाई जी ने हमें नृत्य करने के लिए आमन्त्रित किया।

राग भूपाली में 'ॐ नमो भगवते मुक्तानन्दाय' का संकीर्तन मन्दिर में तरंगित होने लगा, उसकी रागिनियाँ हमारे चारों ओर हिलोरे ले रही थीं। हमने एक गोले में बड़े बाबा की मूर्ति के चारों ओर घूमना शुरू किया। पूजा के लिए प्रयोग किए गए ख़स के इत्र की महक, वातावरण में घुलकर उसे सुगन्धित बना रही थी; उसकी तेज, मनमोहक सुगन्ध हमें किसी अन्य लोक में ले गई, मुझे लगता है कि ऐसे लोक में, जहाँ भाव की अभिव्यक्ति मुख्यतः सुगन्ध द्वारा की जाती है।

और — हमने नृत्य किया। हमने गुरुमाई जी के साथ, बड़े बाबा के समक्ष, बाबा जी का नाम गाते हुए नृत्य किया। कुछ लोग लम्बे और धीमी गति से चलने वाले घेरों में नृत्य कर रहे थे, बिल्कुल एक दरवेश के ध्यान की तरह। कुछ लोग मजबूत, दृढ़ और सुनियोजित क़दम रख रहे थे, उनके पैरों के नीचे की ज़मीन उनकी गति को उर्जा और दृढ़ता प्रदान कर रही थी। हममें से कुछ लोगों के हाथ ऊपर हवा में लहरा रहे थे — भगवान के उल्लास में, उनके साथ संवाद में, उन ईश्वर के साथ जो सर्वव्यापी हैं और उस समय साक्षात् उपस्थित भी थे।

जब गुरुमाई जी हमारे साथ नृत्य कर रही थीं तो मैंने उनकी ओर देखा, उनकी सौम्य मुस्कान की ओर देखा। और उसी क्षण, मानो मेरे अन्दर कुछ खुल गया। या — किसे पता? शायद यह सब इसलिए हो रहा था ताकि अन्तर में एक और भी यथार्थ व और भी व्यापक स्थान में प्रवेश किया जा सके। हम सभी अपने-अपने ढंग से घूम रहे थे, तथापि सामंजस्य के साथ नृत्य कर रहे थे, किसी अलौकिक शक्ति के साथ एकलय होकर, जो नामसंकीर्तन की रसपूर्ण तरंगों पर हिलोरे ले रही थी। हम सभी अपने-अपने तरीक़े से भगवान के साथ संवाद कर रहे थे, फिर भी हम यह एक-साथ कर रहे थे, सिद्धों की संगति में कर रहे थे। वे हमारी परम प्रिय श्रीगुरुमाई थीं जिनकी कृपा से हमें यह अनुभव प्राप्त हो सका था। उन्होंने हमें प्रज्ञान व कृपा प्रदान की थी।

हम नृत्य करते रहे, मैं कह नहीं सकती कब तक। और फिर, रात्रि में अवश्य ही हम किसी न किसी समय अपने-अपने आवास पर गए होंगे। परन्तु फिर मुझे लगता है — क्या सचमुच हम चले गए थे? या फिर हमारा नृत्य-सप्ताह इस व्यापक ब्रह्माण्ड के किसी सुदूर नक्षत्र पर, मानव-हृदय की किसी जगमगाती भव्य गुहा में कहीं चल रहा होगा? क्या यह ठीक यहाँ भी चल रहा है? अभी, ठीक इस समय? आप सभी के साथ?

हम अनवरत नृत्य करते आ रहे हैं। आप और मैं और हरेक, एक सत्य की खोज कर रहा है, वह सत्य, जो सदा से ही हमारा है ताकि हम उसे जान लें। हम निरन्तर नृत्य करते रहेंगे, सत्संग में, महान आत्माओं की संगति में, अनन्तता में।

आदर सहित,

ईशा सरदेसाई

[१] ज्ञानेश्वरी - ६:२३, एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन द्वारा अंग्रेज़ी भाषान्तर।

©२०१८ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।